Total No. of Printed Pages : 3 Roll No.....

DPJ-104
मुहूर्त्त विचार

फलित ज्योतिष में डिप्लोमा(डी.पी.जे.-12/16/17)

प्रथम सेमेस्टर, सत्र 2020

Time Allowed : 2 Hours Maximum Marks : 80

नोट : यह प्रश्न पत्र अस्सी (80) अंकों का है। जो दो (02) खण्डों क तथा ख में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों को हल कीजिए।

खण्ड-'क'

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

नोट : खण्ड-'क' में पाँच (05) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न दिए गए हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए बीस (20) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल दो (02) प्रश्नों के उत्तर देने हैं। (2×20=40)

1. मुहूर्त्त क्यों आवश्यक है? मुहूर्त्त की उपयोगिता पर प्रकाश डालिए।

2. षोड्श संस्कार क्यों आवश्यक हैं? प्रकाश डालिए।

3. विवाह में लग्न, गुरू, शुक्र शुद्धि की क्या आवश्यकता है।

4. राहुकाल एवं यम घण्टक के ऊपर विचार कीजिए।

5. मूर्ति प्रतिष्ठा का विस्तृत उल्लेख कीजिए।

खण्ड-'ख'

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

नोट: खण्ड-'ख' में आठ (08) लघु उत्तरीय प्रश्न दिए गए हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए दस (10) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल चार (04) प्रश्नों के उत्तर देने हैं। (4×10=40)

1. अन्नप्राशन मुहूर्त्त का उल्लेख कीजिए।

2. गुरु शुक्रास्त का सामान्य जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है बताइए।

3. चूड़ाकरण क्यों आवश्यक है बताइए।

4. विधि पूर्वक वृषवास्तु चक्र निर्माण कीजिए।

5. देवशयन से क्या तात्पर्य है? शुभाशुभ कार्यों का उल्लेख कीजिए।

6. पंञ्चाङ्ग की आवश्यकता का निरूपण कीजिए।

7. जलाशय मुहूर्त्त लिखिए।

8. अहोरात्र में कितने मुहूर्त्त होते हैं? होरा के साथ सम्बन्ध स्थापित कीजिए।

****